

प्रिय हाशम !

कह हम समझाया-य समझा के हवा में निच
करके चला हो, ज्योतिषिक भोजिया भोजिया लह भोजिया
विषय, समझाया के हवा में समझा करवा हूँ ।

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

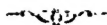
[illegible]

शुद्ध वर शोधन ।

वर्ति	अशुद्ध पाण्याला	शुद्ध विराजना
	जलन या लाह	
२०	रोम	रोम
१८	टपा	टपा
८	सप	साम्प
२१	देवरदामल	देवरदामल
२	पमो गिम्	पेमोटेनम
३	आरम	धाराम
७	गूढी	पुढी
२०	एस्तकिउलस	दे पाद कमा
६	गौदस मोमिका	गवस भोमिका
१२	धा क्षेप	धाक्षेप
१३	उत्तं जन	उत्ते जना
०१	पनाटुमबट	पेपसद्राघट
-	प्यम	प्याम
-	गुदय	गुदय
-	निब	निब
-	पान	पान
-	वि	वि

शुद्ध-विराजना म

लेक्चर्स ऑफ होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका एन्ड घेरापिटविस ।



Aconite Napellus.

एकोनाइट नैपेलस

षाटविध अमृत ।

रक्त प्रधान धातु का युग्म, युवती लोगों को तथा
रोग में प्रायः दृष्टा घटने से बहुत रोग उत्पन्न होने से
एकोनाइट फायदा देता है । सुखा, ठण्डा, लग पर
हो कोई रोग उत्पन्न होता है तब के लिये एकोनाइट
बहुत अच्छा दवाई है ।

प्रताप के लिये बहुत मजिदम बहुत ज्यादा चिन्ता
वां डर होता है और मजिदम होता है बचन रहता है
मजिदम मजिदम में रोग उत्पन्न होता है और ज्यादा प्रयास
इत्यादि रहने से एकोनाइट फलदायक है ।

ठण्डा लगने के समय से गर्दी, ज्वर, खाँस का प्रदाह होने से और गोमूत्रा, उर केवजह से जो कोह रोग लयप होता है, उस में एकोनाइट फायदायक है।

(डाक्टर वार्ट)

गठिया रोग के नयी हालत में जिस वृत्त ज्वर रहता है शरीर का ताप बहुत ज्यादा होता है और ज्यादा दर्द धीचैनी, प्यास इत्यादि लक्षण जाहिर रहने से एकोनाइट फायदा देती है। (डा० कारपरथोयेट)

जो सब रोग में द्रुतपिण्ड का काम बहुत ज्यादा होता है या मूल मुखामन क्रिया बहुत बल्द जल्द होता है उस सब रोग में एकोनाइट फायदामन्द है। (डा० वार्ट)

ज्वर में प्यास धीचैनी घमड़ा का सुखना और नारी गर्भ पूर्ण और तेज से चलनेवाली एकोनाइट का लक्षण है। (डाक्टर वार्ट)

पक्षाघात की नयी हालत में जब दर्द और उस के साथ झुनझुनाहट रहता है तब एकोनाइट ३ x फायदामन्द है एकोनाइट तेल भी मालिश किया जाता है एक हिस्सा मूल चर्क के साथ नव हिस्सा ओलिक उद्यार्दन।

कृप रोग में, सुर्वा खासा, साम लेने में तकलीफ और खाँखने कबलून घड़ घड़ आवाज होने से एको-

लेकिन रोनी को गर्म नालून होता है ज्यादा ब्याल.
 रैनी, पाकस्थानी में कीड़े चील नहीं ठहरता है एरा
 न के पानी के रिसा मत भी बनटी. ठंडा पसीना और
 गोर में जपहा नहीं राह सकता है इत्यादि मत्तणों
 । हम एकीनाइट १ x इस्लामात करके बहुत रोनी को
 मरान दिया है । (डा० इदनी)

इरिमीपीलस, स्थायतेटिना और निजिलस रोग में
 मोलनाइट इस्लामात होता है स्वर के साथ रोय और
 १ ज्यादा मोदनी इस का प्रमाण मत्तण है (डा० मैग)

(डा० पीट्रुस टिटिमल के मालिगट पाथेन में एकी
 नाइट इस्लामात कर के फाटता बटाता. इस वहीके रोग
 में एकी एकी एकीनाइट इस्लामात कर फाटता बटाता
 है । स्वर के और का साथ ज्यादा कमहा मराना पसिना
 नहीं रहता. कमल कर, रौयेंम, इनाम, करवाट मीन,
 लामने टट ज्यादा, रानका ब्याल लामने मिसा हुनने
 लाम करवाट मरान रोना का बिमने लामने से रोना
 रोग का करवाट पाथेन से म हा लामने रोना मोम
 मरवाट रोग का मोम से रोग एका करवाट रोग का करवाट
 करवाट रोग का रोग का लामने मरवाट रोग का रोग का
 मरवाट रोग का रोग से लामने लामने रोना मोम का
 लामने रोग का रोग से लामने लामने रोना मोम का

धुमने से, हिमने डोलने से, ठण्डी हवा से, इस दवा का लक्षण ज्यादा हो जाता है (डा० वार्ड) ।

डा० मूर एक रोगी का हररोज गुदहमें खांसी, खाने पीने के बाद बटती देख कर, पीर उसके साथ धवासीर का लक्षण देख कर इस दवा को मिटाकर आराम किया था—(एलोज; कीलेनसुनिया; नौवस मोमिका देखो)
भोतादिक दवा:—नाइट्रिक एसिड, एलोज, कीलेनसु-
निया इत्यादि ।

इस दवा ३ प २०० घट्टाएँ करते हैं ।

4 ETHUSA CYNAPIUM.

इथुजा सिनेपियम ।

इथुजा या धेंप (कमलमूल) रोगमें खास करके पतंग का उत्तेजन के कारण से पैदा होने से फायदा मन्द है । (डा० वाट्स)

यहोके छलटी में यह दवा बहुत फायदा मन्द । दूध पीने के बाद ही साथ बहुत तकलीफ से तन्नाम दूध के हो जाता पीर उस के बाद रुका हो जाता है जो कमजोरी के कारण मीनट के नानिन्द हो जाता है, (डा० नैथ)

यही के नानिन्द पर पर जमापुष्पा छलटी होता है दूध किसी तरह से बरदोस्त नहीं होता है यही सब नकार में यह दवा फायदा मन्द । (डा० वार्ड)

एद्यथा में पार्सेनिक के मानिन्द कमजोरी और यका-
दट है पर ए स नहीं ।

छाने पीने के बाद, चलती होने के बाद, पाशे प
होने के बाद, मल त्याग करने के बाद, एयुजाका सधर
दठ जाता है ।

मीतादिक दवा:— एन्टीमोनियम क्रुडम; कलहेरिया
काई नादनिस्सिया;

हम हमेशा १० और २०० व्यवहार करते हैं ।

5 ALOE SOCOTRINA.

एलो सोकोट्रिना ।

रोगी को पाखाना जाने का चाहिश् होने से जल्द २
पाखाना जाना पड़ता है ऐसा कि हवा निकलने के घबरा
वा पेशाब निकलने के वक्त या दौड़ा सा पाखाना में देर
हो जाने से पाखाना कपड़ा में हो जाता है । डा: बोल्डम

हम उपर लिखे हुये लक्षण डायरिया या डिसेन्ट्री में
जित्त वक्त देखा एक छोटाक एलोज २०० व्यवहार कर
रुत रोगों को मापन किया है ।

रक्तमाश रोग में अगर खुन और रक्त मिला हुआ
पाखाना हो पेट में गड़ २ बाबाज हो, ज्यादा भूख मातूम
हो, हवा निकलने के समय बेमातूम पैखाना हो और पाखान
न केरास्ता में दरद हो जलन हो एत्यादि लक्ष में एलोज



लेगों को कोरिया (हाथ पैर का घटपड़ना) रोग है उन लोगों को शिर में दर्द आराम करने के लिये यह दवा फल प्रद है

देखार होने से ही जिन लोगों को प्लाग डेलेगियम) होतही वो हमेशा देखार के हालत में बिछीना छोड़ कर उठ जाने का मतलब होता है इत्यादि लक्षण में यह दवा फायदामन्द है ।

बहुत नोचनी ओ ज्यादा जलन के साथ जगम्फोट या चिन्मलेन में यह दवा फायदामन्द है ।

देह का चमड़ा, कान चेहरा, नाक, पैर का भगुनों इत्यादि जगह लाल रंग ओ नोचनी दो जलन इत्यादि होंके कितिम के चर्म रोग में यह लक्षण रहने से यह दवा फायदामन्द है ।

जाड़े के मौसिम में देह का चमड़ा फट जाने के साथ उपर लिने हुये लक्षण रहे तो यह दवा फायदा मन्द है । कोरिया रोग में हाथ वो पैर का थरथराहट रहता है लेकिन नोच की हालत में थरथराहट नहीं रहती है कोर मान पेसी का थरथराहट वा तमान चदन का थरथराहट रहने से भी यह दवा फायदामन्द है ।

रोगी चलने बिजने नहीं सकता है चलने के वजन पर थरथरता है, पे सी में अधिक दर्द होता है इनको मेरनन करने के वजन बैठे रहने के वजन कमर में दर्द होता है ।

दायन में भी जिन लोगों को खरी खसूस का अधिक
मालूम होता है लेकिन इन्हीं की कामजोरी से कारण रहता-
कुछ काम नहीं कर सकता है उससे लिये यह दया
करना चाहिये है ।

अधिक इन्द्रिय सेवा करने से कारण पुण्यपन्था में
एक ही मानिन्द हो जाता, बाल्यदायक सेवायुक्त मन उदास
न जाता, आत्म बलानि, ममत्त शरीर दुर्बल, और अधिक
धन विद्या इत्यादि कार्यों में यह सेवा फलदायक है ।

सुखाय वे चरणे वा अग्निं इन्द्रिय वेदा वे चरणे
सुखेन वे चरणे वे चरणे चरणे वे चरणे चरणे

दृष्टि धिक्कृत होती है। इससे हमें दृष्टि नहीं रहता है।
इससे हमें पता है कि हम नहीं देख सकते हैं। (हम नहीं देख सकते हैं)

हमारे और तुमारे बीच अन्तर का अन्तः अन्तः अन्तः है
 जिसे अन्तः अन्तः अन्तः अन्तः अन्तः है ।

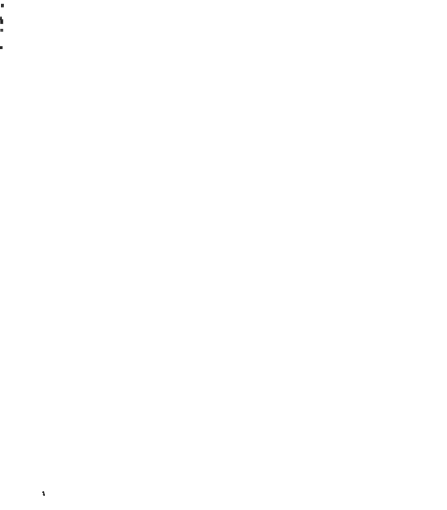
सुखानन्द ने सुल के माजिद जिनके से और आशुता
पूरी बरगोजे के लगे से आशुता को आशुता पर हम
कोई बात नहीं है आशुता बिना है ।

॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥
 अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥
 अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥
 अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥
 अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥ अथ अग्निहोत्रं ॥

प्रिय छात्रगण ।

आज हम परम्परागत परमेश्वर के रूपा से लेख
ग्रन्थ बाह्य ऐन्द्रियों वैश्विक मंडेरिया मैडिया एन्ड थिरापिड
टैपस, आपनोंगों के हाथ में समाप्त करना हूँ ।

इस मैडेरिया मैडिया में डा पार्ट डा ऐनीमिनः
डा काउपर थोयेट, डा गैरः डा हयति डा पेलः डा फेलः
डा ऐरिद्ध डा पारनेट डा फौरिद्धनः डा रोः डा सरफागः
डाः स्तजः डा इनहमः डा ऐमपलः डा जारः डा सोयन
डा हिउज इत्यादि विषित्सपोमा द्विफटिपल लक्षणस्य, -
जिस २ रोगमें, जिस २६५ फो इस्तेमाल कर फायदा उठाया है,
उन सद्यों का नाम पुनं तौर से लिखा हुआ है । इसके सिवाय
डा मुहुनदानः डा भादुरि के प्रत्यक्ष पालप्रद लक्षण सब
लिखे हैं । ऐसा किताब आज तक किसी भाषा में नहीं
लिखी है । पहिला भाग के माथि पृष्ठ का भाग में भी
एकहज़ार ७१ इवार्दों का लक्षण रंगना शुरू का भाग
बहुत जल्द प्रकाश होगा



एन्टीम क्रुड ।

जोम के ऊपर सफेद दूध के मांजिन्द लेप एन्टीम क्रुड का प्रधान लक्षण है । पदहज्जी, पतला दल, इत्यादि किसी रोग के साथ जोम के ऊपर सफेद लेप रहने से एन्टीम क्रुड स्पष्ट होता है ।

हरेफ किलिमि के चनड़े के रोग में यह दवा फायदानन्द है चेचक रोग में यह दवा बहुत फायदानन्द है । (डा: मैथ) पुराने एन्टीम दल में एन्टीम क्रुड फायदानन्द है ।

मल सफेद, पदहज्जर उसके साथ गोल २ गुठली के ऐसा निकलना अंतर्ही में गरम मानून होना, पेट में दर्द दो मनोड़ा इत्यादि लक्षणों में फायदानन्द है । (डा: काउपर) घसगसी निमाज के सबद से नांख के पल में प्रदाह होने से यह फायदानन्द है । (डा: वार्ट)

एन्टीमक्रुड उलटी का बहुत उन्दा दवा है । इरिकाक में जी निवभाना ज्यादा रहता है इसने उलटी व उलटी करने का मतलब ज्यादा होता है इरिकाक में जोम साफ व छोडासा लेपदा लेकिन एन्टीम क्रुड में जोम गाढा सफेद लेप से ढका रहता है । (डा: एलेन)

ज्या. जडा देका शुरू होता है हाथ पैर उष्ण प्यास



एषोऽनामन् वाचस्पत्यम् । तदादुःखमन् प्रमाणं तस्मिन्
ने गोप्ये रोगं तेने मे भी एषोऽनामन् वाचस्पत्यम् ।

पेट को हाथ देवों से मोथ को जन्मे साथ सुखी के
मनिक दन्त होने में यह दया पापदामन है ।

तब लोका ६५ प्रकाशर करने है ।

20 ARGENTUM NITRICUM

अरुणोदयः ॥ १ ॥

जगत्तु संपन्न पशुतु दिनों तव नानन्विता मोक्षतु से
कामतु तव्यु या पशुते शोभतु मे धर्मोत्तमन फलपशुतुतु है ।

काम्य यज्ञ मुखरु लोका, क्षीण, सुदुर्लभ ये मानिन्द
 वेदो वेद यह इत्य यज्ञ यज्ञयज्ञमन्द है ।

[illegible]

... ..

... ..

... ..

इस हमला प्रभाव के बाद सर्जिकल ६५० चार सौ टक
अपरहम सैन्य २ घण्टे के बीच में करती है। इससे दोनों
को बिना किसी का सबकोक नहीं होता है।

विहार स्तर प्राप्त करने वालों को ऐलेक्ट्रिक दुपार
में शक्ति का बहुत लाभ मिलता है ।

निम्न ही हालतों के समझे साथ दिना वही वेत
वेतान निश्चित, मूल पृष्ठ पर उम्मा ठीक उम्मा
देकर उनके साथ ही देना हो जाता, जो मूल
वर्षा नष्ट होकर है इत्यादि स्थान में अनिष्ट लान
होता है

५. ५५५

महिं कलक होनी स दण्डि हल्लज जो होनी को
 होत को हल्लज दूजे पर पर कलक होनी कि हल कल्ले
 होत कलक हो कल्ले । (दा. कल्ले)

५. सुदृढः)

समस्त कृतार्थ ब्रह्म। करने के लिये मैं, अपने ही
 पुत्र बनाई हूँ। मैं, अपने लिये ही सब करने से और सब
 सब ब्रह्म। सब करने लिये मैं, अपने ही
 १४ ब्रह्म करने से ब्रह्म ही है। १४ (होयल)

[illegible]

के बहुत रोमियों को आराम किया है । (डा मुहरजी)

सबसे अच्छे के ऐसा बड़बुद्धार ठं बर, पनैती में दर्द
पेट फुलना को दिखती, एक्कड़न कोई चीज पाने का मतलब
नहीं होना इत्यादि बर्नि का के लक्षण है ।

कोष्ठबद्ध, सरलान्त्र में पैखाना उमा हुना रूना
पर बाहर नहीं होना, गर्मपती को पीना के मानिन्द
मल इत्यादि हालतों में बर्नि का फायदामन्द है ।

होपिङ्ग खांसी, बर्न कोषोपाने के बरत या पहिले रोना
पोंबते २ आंख खाल होना नाक से रून गिरना
इत्यादि लक्षणों में फायदामन्द है ।

दिफारः पर में रोगों के नरम पिछौना भी सभत
मात्तूम करता रहे और नरम उगद के लिये पिछौना के
चारो तरफ लोटने रहने इत्यादि लक्षणों में बर्नि का फायदा-
मन्द है । (डा मुहरजी)

छुपचाप रहने से सोने से, खाया पीने से बर्नि का
के रोग का लक्षण ज्यादा होता है और स चालन से आराम
मात्तूम होता है ।

हम हमेशा ६ X ३० २०० सी एम व्यवहार करते हैं

2. A - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1

अमे निबन्धन गलबन

बहुत धकचर जीवन बर्नि का लक्षण : १. उमर का

टाइफाइड घोखार की पहिली हालत में वैपटिसिया
 व्यवहार करने से टाइफाइड घोखार ब्यादा प्रबल नहीं
 होता है अथवा नहीं ज्यादा दिन तक चरता है ।

डा० हीडज -

क्षयकारा रोग हैक्टिक ज्वर में वैपटिसिया व्यवहार
 करने से आराम हो जाता है । डा० मीगेल

साधारण घोखार में जैसा एकोनाईट जैसीही टाइफाइड
 ज्वर में वैपटिसिया फायदामन्द जो सब घोखार पहिली
 हालत में समान्य ज्वर कहला कर मालूम होता है और
 जिसमें एकोनाईट द्वारा कुछ फायदा नहीं होता है उस में
 वैपटिसिया व्यवहार करने से फायदा आराम होता है ।
 रेनिटेंट ज्वर में पाक्स्थली का ज्यादा गड़बड़ होना से
 वैपटिसिया व्यवहार करना चाहिये ।

समान यदन में ज्यादा दस्त इसलिये रोगी एक जगह
 पर सिर नहीं गड़ सकता है हमेशा स्थान बदलता रहता है
 इत्यादि वैपटिसिया का प्रधान लक्षण है ।

डा० फेरिडिन

टाइफाइड छायगिया में र तमाशय में क्लीन काला
 रंगका पानी ला खुन मिला हुआ दूध युक्त मल, खुवा
 और तमाश प्रमान में रंग दूध पाक्स्थली वाली मान्यम
 होता इत्यादि लक्षण में र दस्त फायदामन्द डा० हेल्

बेल्लाडोना:

* उक्त घाटं निम्न विशेष लक्षणः

मनुष्य के उपर इनका लक्षण देना उक्त है यैसा
नास, बाँझा, ज्वर प्रसार पावन के तरह देना इत
बहुत ये लड़ाई करने को ईच्छा होने लगता इन्धुनिक
सर्पसक्ति, अस्त्रसक्ति, अस्त्रसक्ति इत्यादि होता होता :

इसके विरुद्ध से कुछ उठता हमेशा घबरा घबरा और
भाग जाने का मनाने लगता होता बहुत इत्यादि कुछ
उठता, निद्रता पड़ा होने से दृष्टिको अंतर होता
लड़ाई में भागता इत्यादि लक्षण में देखा जाता फायदा है।

यदि में ज्यादा गुन जनता को उत्तरे साथ देता होता
यदि का घबराता फड़कता, जो हाँस भावने के साथ यदि
इस संवत्सर से और बाबा से यदि इस ज्यादा होता
इत्यादि देखा जाता का प्रचार लक्षण है।

यह हमेशा पावने है नौद को हाथ में लाने
और उठने और उसके साथ साथ का लक्षण, उठने
गोता से उठने सुखान रहना अचानक इस उठने
है और बहुत अचान होता है।

अन्य में लक्षण लगता बाहर की —

मालूम होना इत्यादि लक्षण में घेलाडोना फायदामन्द ।

[डा० फेल्ड]

ज्वर रोग में जिस चकत एकोनाइट और घ्रायोनिंग से अलग नहीं मालूम होता है तब पसीना निकलने का लक्षण देखा कर घेलाडोना व्यवहार करना चाहिये ।

.जीम लाल मुष्ठा कितारा लाल बीच में सफेद लेप बीच २ में लाल बिन्दु । डा० फाउपर

परिसिपिलेस रोग में फुला हुआ जगह का लाल रंग घ गम रहने से घेलाडोना व्यवहार होता है परन्तु ज्यादा फुला रहने से एपिस, फोका के मानिन्द रहने से एस्ट्रक्स फायदामन्द । डा० हीउज

एम हमेशा ३X, ३०, २०० व्यवहार करते हैं ।

29 BORAX

बोरैक्स ;

डाक्टर घार्ट लिखित विशेष २ लक्षणः—

जिन सब चर्चों को पाकखली में ज्यादा जमाता है और छट्ट पुष्ट नहीं होते हैं उन के लिये बोरैक्स बहुत फायदामन्द ।

हिलने से नीचे तरफ गिर पड़नेका डर, पथे शिर नीचे करने से डरते हैं डिडोले पर चढ़ने से नीचे तरफ गति होने

प्रायः नीन्द की हालत में जाड़ा घो फग्न होता है ।

शाम के समय फग्न; यदन से फपड़ा खोलने पर फग्न, जाड़ा घो फग्न एक के बाद दूसरा जाहिर होता है ।

यशों का शिर, चेहरा घो हथेली गरम रहना इत्यादि लक्षणों में बोरैक्स फायदामन्द ।

हम हमेशा ३०, २०० व्यवहार करते हैं ।

30 BRYONIA ALBA.

ब्रायोनिया एल्बा ।

संचालन से दर्द ज्यादा होना ब्रायोनिया का प्रधान लक्षण है । जिस किसी रोग में यह लक्षण हो उस में ब्रायोनिया व्यवहार करना चाहिये चिड़चिड़ा मिजाज का आदमी; यात घो गेठिया युक्त घो पीत प्रधान आदमियों के लिये ब्रायोनिया फायदामन्द ।

डा० एलेन

दर्द; पाँटी घेन्दने के ऐसा या तोड़ जाने के ऐसा घो संचालन से दर्द ज्यादा होना, बिल्कुल स्थिर रहने से घो दर्द के तरफ दर्द के उगड़ दाव कर सो रहने से आराम मान्द होना है ।

नमाम यदन का फर निकलने वाला पदार्थ मुखा मुह में लेकर पाकता घं रास्ता तक मुखा ज्यादा प्यास लेकिन शरीर में ज्यादा करके पान पान ।

अगर रोगीने से या संचालन से दर्द हो, तबलांक
ज्यादा हो देता कि सांस लेने के समय दर्द हो; प्यास
बुढ़ी होठ लुत्ता, कोष्ठबद्ध. जीभ गैल से ठकी हुई, कोई
चीज पाने से भी गरम कोठरी में रहने से खांसी रहने पर
ब्रायोनिया फायदानन्द ।

डा० फेरिंग

पात रोग के समय से तमान गाठ में ज्यादा भी नया
प्रटोइ. फुल जाना, गरम मालूम होना भी ज्यादा दर्द रहने
से ब्रायोनिया फायदानन्द. रोगी के घात में, नया दो
पुराना दुस्त रोग में अगर दर्द संचालन से ज्यादा हो तो
यह दवा लाभदायक ।

डा० जेरिंडू

उपर में जाड़ा ताप हो पसना इन तीनों हान्यत में
प्यास रहने से जो ठसके साथ शिर में दर्द, तमान गरीर
में दर्द लेख्युक्त जैभ हर्मगे रोगी की जाड़ा मालूम
होना इत्यादि लक्षणों में ब्रायोनिया फायदानन्द ।

डा० जेरिंडू

हृदय रोगों में जो दर्द हो, जो कि बिना बिनाय २ लक्षण
में दर्द बुझने के लिए या बहुत बने के लिए दर्द
संचालन से हो, ३ = न दर्द लक्षण होने बुझाव रहने

निकल देता है, मिश्रित अच्छी तरह नहीं निकालने के समय से फेफड़ा का प्रदाह होने से ब्रायोनिआ फायदामन्द है, टाइफाइड फीभर में अवसाद घो काम काज सम्बन्धीय प्रलाप, ज्यादा प्यास घो कोष्ठबद्ध रहे तो ब्रायोनिआ फायदामन्द है।

डा० फाउपर

घर जाने की इच्छा का लक्षण रहने से टाइफाइड फीभर में ब्रायोनिआ फायदामन्द।

डा० हेरिङ्ग

जो सब रोगी प्योड़ने के समय छाती पर हाथ धरते है वो उसको चीप देने से दर्द मालूम होना ब्रायोनिआ का प्रधान लक्षण है।

निमोनिया रोग में ब्रायोनिआ बहुत उत्तम दवा है और इस के कवल एक्कोनाइट या सिरमफाम और उसके बाद फोस्फोरस व्यवहार होता है।

डा० मुखर्जी

टाइफाइड स्वर में टट्टोनी ज्यादा रहने से वो पतला दिता होने से वैपटिसिया; कमजोरी ज्यादा रहने से जेल्स, ब्रायोनिआ में कोष्ठबद्ध।

ब्रायोनिआ में काम काज सम्बन्धीय प्रलाप; वैपटिसिया में अग प्रत्यग पकटा करने का मतलब ब्रायोनिआ में जीभ

शिर को हटो फरक रहना; शिरसे पसीना चलना इन्हों के लिये कौलकेरिया कार्य लाभदायक है ।

मोटा होना पानी सा खुन या खुन में हाईट कार्बोरेट ज्यादा रहना; हमेशा सर्दी लगना तनाम शरीर पतला पर पेट मोटा; जिन पक्षों को आसानी से दांत नहीं निकलता है; आसानी से चलने फिरने नहीं सयता है वो जिन्हों को पैर वो शिर में पसीना तथा जिनको पैर ठण्डा भोजा में डक; हुआ मरूम हो, घटी खोज उलटि के साथ ज्यादा भूष लगना शिर घुमना, ठण्डा पानी या पानी सा खोज मुंह में लेने से दांत में दर्द ।

होमो प्लो इल्ड २ ज्यादा मामिक नियन्त्रण धाड़ा सा कारण से मासिक जाहिर होना, दूध के मानिन्द लिडकोरिया निकलना,

पतले कक से सांस नहीं भरा हुआ; रोगी बलजोर वो सोय; छाती में दर्द मुंह के स्वाद पट्टो, मल में राह गंध निकलता ऐसा कि पक्षों का शरीर से जो राह गंध मान्य होना, पक्षों को खड़ा खाने को इच्छा; संचालन से पसीना निबटना ।

ठण्डे दूध दिक पों गीला हवा से, पानी में नीम फल या पानी में कान करने से सबसे से, मिर्ची पर छुटने के

चापना ।

इसर बट्टे लिखित विशेष २ लक्षण ।

गन्धक क्षय के समय से जीभनी शक्ति की दुर्बलता बढ़ पड़ती है। दस्ता के बाद चत में पलना, और दस्तों को रोकने के कारण दुर्बलता, ठीक समय में रोग प्रकाश होने चापना का प्रधान लक्षण है ।

बर्तों एवं लगने से रोग ज्यादा होता, थोड़ा सा स्पर्श से संयोजन से दर्द ज्यादा होता, एक दिन के बाद ठीक मन पर रोग बढ़ता चापना का प्रधान लक्षण है ।

मैलेरिया के समय से इसर या सपिचम ज्वर, शीत, ताप, रक्त, तल्लों छल्लों पूरे तीर से प्रकाश होता, सासकर के रोग मैलेरिया में चापना ज्यादा कायदा होता है ।

रिग में एक ज्वरान्ते के समय से दर्द, ठीक मारना, मारना होता है कि जैसे रिग फट जायगा वो उस के साथ बदन में ज्यादा होता। यम रोग के रोग निश्चय के बाद रोगी को लक्षण प्रकाश होता है ।

मैलेरिया के समय में ज्वरान्ते रोग रोग रोग रोग रोग

मैलेरिया, एक एकरा रोग रोग रोग रोग रोग

यह लक्षण रोग के लक्षण रोग रोग

किन्तु हिस्त्रियाके लक्षणमें तिमितिकुगा फायदामन्द ।

युन दुःखित उसके साथ जोर से सांस फेकना वो ज़रूर शिर में दर्द ।

हाथों में धरपहाट वो उस के साथ नरात्मन्धी धरपहाट, युन देखनी वो पेशी खींचना ओभरी में वो ज़्यादा में नरा सगन्धी वो पात का दर्द और उसके साथ बों पदार्थ उतर पड़ना है एला ही दर्द वो ज्यादा दुःखित होता, ओभरी में नरा सगन्धी उत्तेजना वो छूने से धह सकन मान्य होना, और उस के साथ से डिसमिनोरिया, एमेनोरिया, मेट्रोपिया वो ज्यादा उत्तेजना वो उसके साथ आदेश दर्द इत्यादि प्रकार होना शिर के भीतर से बाहर वो तरक दर्द फैलना है, मस्तिष्क के ऊपर वो पोंटे तरक ज्यादा दर्द और आधः पोंटे तक फैल जाना, उसके साथ ज्यादा ताप, हिस्त्रिया के साथ से देखनी ।

ज्यादा वो युन देख तक टहरने वाला दर्द आंग की हड्डी में होना दर्द ।

कोरिया रोग धमकाना युन देखनी की धारणिक, शिर ।

दिन्युन लक्षण के लक्षण : लक्षण और अंगों करने का लक्षण : लक्षण युन देखनी : लक्षण में लक्षण लक्षण के साथ लक्षण में लक्षण दर्द युन देखनी

रात में आराम करने के समय, घेंडा रहने से, चीने के समय, लाने के यत्न को नियम का रक्षण व्याप्त होना सनायन से आराम मान्य होता है ।

हम हमें ३०; १०० व्यवहार करने हैं ।

58 CROCUS

क्रोकोस ।

उलटी ज्यादा रहना, ज्यादा आक्षेप कुयम का प्रधान लक्षण है ।

डा० इनहम

मृगो रोग में चेहरा मलिन पीलापन कुयम का लक्षण है । हम ३५ एक मिनट के दिन में तीन गुराक व्यवहार कर एक लड़को को आराम किया है ।

डा० हलेन्ड

मृगो रोग में ज्यादा आक्षेप कुयम का लक्षण है ।

डा० वेईस

मृगो रोग का आक्षेप हाथ पैर के अंगुली से शुद्ध हो कर तमाम बदन में फैलना है ।

डा० मैथ

हृत्शूल रोग में कुयम बहुत कायदा मन्द ।

डा० वेईस

दुपिङ्ग बाली में कुयम कायदा मन्द दवा है अगर चेहरा नीला रंग, गला सकुचित, हाथ की मुट्ठी बन्द, जी मिचलाना उलटी रहने से व्यवहार होता है ।

डा० फाउपर

हैजा रोग में पेशाब बन्द होने से जो पेशाब तलबे में आक्षेप होने से नज्ज फटजार जो मुता के मानिन्द होने से, उलटी के बाद नीन्द के मानिन्द हालत, बदन ठण्डा नीला रंग, बहुत दुर्गन्धना, तमाम बदन में ठण्डा पसीना इत्यादि लक्षण में कायदा मन्द ।

सिने पण्डित नहीं होने से कुपित रहने। व्यवहार करने
में।
दा वैगुण्ड

एकमेक १२, ३०, २०० व्यवहार करने है

है। रोग में इन कुपित एनेटिकम् व्यवहार करने है

C. DIGHELI-

डीजिटलिस

डिजिटलिस लिपित विशेष २ लक्षण

जिस किसी रोग में हृत्पिण्ड कमजोर होने से और
वसके साथ नाड़ी की गति गड़बड़ होना या धीमा हो रुक
रुक कर चलना लेकिन हिलने डुलने से नाड़ी की गति बढ़
जाती है-थोड़ा सा संवत्सन से अधिक हस्तसन्धन के साथ
नाड़ी का सन्धिगम गति होती है।

हृत्पिण्ड रक्त का गड़बड़ के साथ अधिक शीघ्र लक्षण,
नाड़ी की गति धीमा और सन्धिगम लक्षण में डिजिटलिस
व्यवहार करने से हृत्पिण्ड मजबूत होता है हृत्पिण्ड का
पेना विवर्धन करने से यह रक्त व्यवहार होता है

हृत्पिण्ड में गड़बड़ होना का रोग मजबूत हो
हृत्पिण्ड के मजबूत होने से रक्त व्यवहार
होना है।

हृत्पिण्ड में गड़बड़ होना का रोग मजबूत होना है।

जैसे कापड़ा नहीं होने से कुप्यम लाना व्यवाहार करना
नहीं। हा फेगिडुटन

एन.एन.ए. १२, ३०, २०० व्यवहार करते हैं

ऐसा रोग मैं हम कुप्रस पतंजलिम् व्यवहार करने हूँ ।

61 DIGIELIS

है। ज़िटे लिस्

हाथर चाट लिखित विशेष २ लक्षण

जित्त कित्ती रोग में हृत्पिण्ड क्षान्त होने से और उसके साथ नाड़ी की गति गड़बड़ होना या धीमा हो रुक रुक कर चलना लेकिन दिलने डुलने से नाड़ी की गति बढ़ जाती है—थोड़ा सा संचालन से अधिक हृत्स्पन्दन के साथ नाड़ी का सदिग्ध गति होती है।

हृत्पिण्ड दन्त का गड़बड़ के साथ अधिक शोथ लक्षण, नाडों का गति धीमा और कविराम लक्षण में दिमिदलित व्यावहारिक रूप से हृत्पिण्ड लयल होता है हृत्पिण्ड का प्रेशर धीमा - कम गति में धीरे धीरे व्यक्त होता है

अतः $\frac{1}{2} \times 2 = 1$ इति मन्त्राणां संख्या राशिः

$$A^2 \quad A^3 \quad A^4 \quad A^5 \quad A^6 \quad A^7 \quad A^8 \quad A^9 \quad A^{10} \quad A^{11} \quad A^{12} \quad A^{13} \quad A^{14} \quad A^{15} \quad A^{16} \quad A^{17} \quad A^{18} \quad A^{19} \quad A^{20} \quad A^{21} \quad A^{22} \quad A^{23} \quad A^{24} \quad A^{25} \quad A^{26} \quad A^{27} \quad A^{28} \quad A^{29} \quad A^{30} \quad A^{31} \quad A^{32} \quad A^{33} \quad A^{34} \quad A^{35} \quad A^{36} \quad A^{37} \quad A^{38} \quad A^{39} \quad A^{40} \quad A^{41} \quad A^{42} \quad A^{43} \quad A^{44} \quad A^{45} \quad A^{46} \quad A^{47} \quad A^{48} \quad A^{49} \quad A^{50} \quad A^{51} \quad A^{52} \quad A^{53} \quad A^{54} \quad A^{55} \quad A^{56} \quad A^{57} \quad A^{58} \quad A^{59} \quad A^{60} \quad A^{61} \quad A^{62} \quad A^{63} \quad A^{64} \quad A^{65} \quad A^{66} \quad A^{67} \quad A^{68} \quad A^{69} \quad A^{70} \quad A^{71} \quad A^{72} \quad A^{73} \quad A^{74} \quad A^{75} \quad A^{76} \quad A^{77} \quad A^{78} \quad A^{79} \quad A^{80} \quad A^{81} \quad A^{82} \quad A^{83} \quad A^{84} \quad A^{85} \quad A^{86} \quad A^{87} \quad A^{88} \quad A^{89} \quad A^{90} \quad A^{91} \quad A^{92} \quad A^{93} \quad A^{94} \quad A^{95} \quad A^{96} \quad A^{97} \quad A^{98} \quad A^{99} \quad A^{100}$$

11 4 2

1. *Chrysomelidae* (Coleoptera)

पेना दर्द जो पसोना हो पेशाब में दुर्गन्ध उत्पन्न करने का लक्षण है।

पेशाब में दुर्गन्ध पीव को बर्फ मिला हुआ धाव को चोक २ के पेशाब होता लक्षण में उत्पन्न करने का लक्षण है।

मुतसल्ली में उत्पन्न हो पेशाब में बर्फ या उम जाना उत्पन्न करने का लक्षण है।

डा इतरम,

क्री ले, गो के पंति में ताप, नोचनी हो पेशाब के मानिन्द फुंसी लक्षण, दुबत काम, गमाद रोग में यह दवा व्यवहार होता है।

ड गनेली

पश्चात्त, शीत हो पानी में भीगने के लक्षण से हो उसके कारण नया पश्चात्त रोग में पालन करने की भीम हो भांगके पश्चात्त में उत्पन्न करने व्यवहार होता है।

भारतिका रिया, भीगने के कारण, नोचनी हो उत्पन्न को साथ सूई बुझने के ऐसा दर्द, नोचनी के दर्द उत्पन्न हो फूली निकलने के पदल नमान दर्द में सूई बुझने के ऐसा दर्द लक्षण में उत्पन्न करने व्यवहार है।

पानी में भीगने के दर्द उत्पन्न करने व्यवहार करने से शरीर नहीं होता है।

हम हमेशा ६ १० पालन करने

निचलाता था। कड़ुआ उलटी होना, शिर में दर्द, तमान घ-
 र्त में दर्द, पाश्चम्यी घां ग्रीह में तरलीक देने वाला दर्द,
 पोट से जाड़ा कुर होना है जाड़ा से कुर ज्यादा होना है
 जाड़ा घम होने से जो निचलाता ता कड़ुआ उलटी होना
 जॉन सरीर घां पीठे रूढ़ से मेल से ठकी रहता इ यदि
 लक्षण में यह रूढ़ पाश्चम्यी

५१० पञ्चिन

आइये ये सबल प्राम ज्योदा जो निचलाना पो लाली
 पो; उनको साथ ज्योदा तीन नामने के ऐमा गिरद, खाने
 पोने के पदार्थ का स्वाद नहीं मिलता है भूख नहीं लगता,
 दुबल में आइये शुद्ध होकर दो एक घन्टा रुकता है, दिन भर
 रुक रुक कर शान में ये हा एमोना होता है, एक दिन के
 बाद रुक, ये पाता रुक में रुक रुक पापदानन्द ।

५५५

हृष्टि में हृष्टि के दो चरणों को चोट लगाते हैं। चरण हृष्टि
मरण हृष्टि में चोट लगाते हैं। हृष्टि के चरण मरण हृष्टि में चोट लगाते हैं।
हृष्टि के चरण मरण हृष्टि में चोट लगाते हैं।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नाक से ज्यादा पानी सा धाव निकलना, या पीव के पेता सफेद धाव, आंख से ज्यादा गरम पानी गिरना: खांसी, छाती में दर्द, कफ निकलना: श्वासे में खांसी ज्यादा होना, दिन में राती होना रात में खांसी नहीं होना इत्यादि इडकुंसिया का प्रधान लक्षण है ।

डा० काउपर

इन्फ्लुन्जा के मानिन्ड तमाम दशन का कफ निकलने वाला परदा के रोग में यह दया बहुत फायदामन्द ।

डा० काउपर

घोट लगने के समय से आंख का प्रदाह होने से ओ उसको साथ इडकुंसिया का लक्षण रहने से इडकुंसिया व्यवहार किया जाता है ।

धाव के समय से क्षत पैदा होगा वो उठता २. फुनसी पैदा होने से यह दया व्यवहार होता है ।

डा० डेरिङ्गटन

निःस्त के साथ आंख का प्रदाह होने से इडकुंसिया फायदामन्द ।

डा० डनहम

कोरनिया में दाग वो क्षत इडकुंसिया से दायम होता है ।

डा० काउपर

एमोरेसिस, ऐपौमर स्फोफला, आयरायटीस

विद्यार्थी विद्या योग शस्त्रात् कश्चि न विद्या विद्यार्थीनाम्
प्राप्तव्यम् ॥ १ ॥

१. १९५१-५२ में १००० करोड़ रुपये का बजट
 २. १९५२-५३ में १२०० करोड़ रुपये का बजट
 ३. १९५३-५४ में १४०० करोड़ रुपये का बजट
 ४. १९५४-५५ में १६०० करोड़ रुपये का बजट
 ५. १९५५-५६ में १८०० करोड़ रुपये का बजट
 ६. १९५६-५७ में २००० करोड़ रुपये का बजट
 ७. १९५७-५८ में २२०० करोड़ रुपये का बजट
 ८. १९५८-५९ में २४०० करोड़ रुपये का बजट
 ९. १९५९-६० में २६०० करोड़ रुपये का बजट
 १०. १९६०-६१ में २८०० करोड़ रुपये का बजट

[illegible][illegible][illegible]

[illegible]

ସମସ୍ତଙ୍କ ଲାଭ ପାଇଁ ଏହି ସମାଜର ଲକ୍ଷ୍ୟ
 ଶୁଦ୍ଧ, ସ୍ୱାଧୀନ, ସ୍ୱାଧୀନ ଓ ନିରାପତ୍ତ ଶାନ୍ତି
 ସମାଜର ଲକ୍ଷ୍ୟ ଶାନ୍ତି ଓ ସ୍ୱାଧୀନତା ।

दिनांकिका से यह ज्ञात होता है कि मन्त्रालयों का
 प्रशासन होने से यह ज्ञात होता है, कि मन्त्रालयों का
 प्रशासन होता है। यह ज्ञात होता है कि मन्त्रालयों का
 प्रशासन होता है। यह ज्ञात होता है कि मन्त्रालयों का
 प्रशासन होता है। यह ज्ञात होता है कि मन्त्रालयों का

दुर्लभता से कम कम से सम्मान हो जाता है कम
 का सम्मान नहीं उठा सकता है अतः हमें हमारे सम्मान से
 का सम्मान हमारे से सम्मान होना है अतः हमें सम्मान से
 उठाना सम्मान

[Faint handwritten notes at bottom]

1000

परजिना से या जिस किस किसिम के वर्म रोग में
 अगर मंद है मानिन्द लहसुदार गाढ़ा पंथ निरुले तो
 प्रेप्रांति फायदानन्द । डा नैम ।

एतद्देशा ३०, २०० सं० पत्रः प्रकाशित करने हैं ।

२३७३

धुन निकलना पद करने के लिये है इसलिए उसमें दया है। धुन का रंग पाला दो जमा हुआ जर्निषा दया के लक्षण के कारण इस में खंड लगाने के ऐसा दर्श भगवान होता है।

नाम: संजय, असाय, ऐरावत, अरुण इत्यादि विना
जगत् से दूर निवसने से उभयो ज्ञान करने के लिये
होमभक्ति व्यवहार किया जाता है।

शः एह

मन्त्रार से बहुत विचलित, परानिद्रा से कारण था
 शांसारं उर मे ए किम किमं रोग मे बहुत विचलित
 दो उर निमं पुनं कल्प एव वा एव न विचलित मे हीं
 मेनिम कल्पमन्त्र

नया लाल रंग प्रदीप में यह दवा बाहर में लगाने के
 लिये बो पॉन्ट के लिये व्यवहार होता है ।

डा० चार्ट

लाल रंग में यह एकोनाईट को मानिन्द किया प्रकाश
 करता है ।

म्यरा में, गीला समय में और रात में लक्ष्य सच बढ़ने
 हैं ।

ध्यान में, सूखे समय में कमती होता है ।

मौतादिर दवा मिरन, अनिकां, केल्डला ।

हम हमेशा नदरदिचर, २X व्यवहार करते हैं ।

